चतुर्थ अध्याय

"विवेच्य उपन्यासों में चित्रित पात्र एवं चरित्र-चित्रण"

चतुर्थ अध्याय

''विवेच्य उपन्यासों में चित्रित पात्र एवं चरित्र-चित्रण''

प्रस्तावना -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना तीसरे तार सप्तक के प्रमुख कवियों में से एक हैं। उन्होने हिंदी साहित्य में कविता, कहानी, नाटक, एकांकी, बाल-साहित्य के साथ-साथ उपन्यास साहित्य में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। सर्वेश्वर जी ने 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' इन लघु-उपन्यासों में पात्रों का यथार्थ चित्रण किया है। उनके लघु-उपन्यासों का केंद्रबिंदू नायक तथा नायिका ही हैं। उन्होने अपने लघु-उपन्यासों में पात्रों के मानसिक संघर्ष को प्रस्तुत किया है। पात्र तथा चरित्र-चित्रण को देखने से पहले हमें चरित्र-चित्रण का क्या महत्त्व है यह देखना अनिवार्य हो जाता है। चरित्र-चित्रण की संकल्पना को स्पष्ट करना होगा।

4.1 चरित्र-चित्रण का महत्त्व -

जिस प्रकार उपन्यास में कथावस्तु का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है उसी प्रकार उपन्यास को गति देने का कार्य पात्र एवं चरित्र-चित्रण के द्वारा किया जाता है। उपन्यास में चरित्र-चित्रण का विकास कलात्मकता से होता है। उसकी कलात्मकता के बारे में डॉ. प्रतापनारायण टंडन का कथन द्रष्टव्य है- ''नवीन दृष्टिकोण को प्रधानता देनेवाले लेखकों ने कथानक की तुलना में चरित्र-चित्रण को अधिक महत्त्व दिया। चरित्र-चित्रण को उपन्यास का प्राण माना जाने लगा और चरित्र-चित्रण की कुशलता और कलात्मकता से ही उपन्यास का महत्त्व निर्धारित किया जाता है।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि चरित्र-चित्रण की कुशलता उपन्यास की महत्ता को बढ़ावा देती है। चरित्र-चित्रण के बारे में रचनाकार को यह ध्यान रखना होता है कि पात्रों की सिर्फ वर्गगत जानकारी

---

1. डॉ. प्रतापराव टंडन - हिंदी उपन्यास कला, पृ. 209

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

नहीं हो, तो उसे पात्रों के क्षेत्रीय परिवेश की जानकारी भी होना आवश्यक होता है। सफल उपन्यासकार पात्रों द्वारा अपनी जीवनानुभूति साहित्य में दिखाता है। उपन्यास के चरित्र-चित्रण में रचनाकार की सूक्ष्मता तथा प्रतिभा का परिचय मिलता है। उपन्यास में विभिन्न पात्रों का नियोजन मूलतः विविध मानवीय भावनाओं और प्रतीकों के रूप में होता है।

हिंदी साहित्य में उपन्यास का व्यावहारिक रूप विकसित हुआ और उसे कलात्मक प्रौढ़ता मिलने लगी है। उस समय उपन्यासकार अन्य तत्त्वों के प्रति दृष्टि रखने लगा। इसी बीच धीरे-धीरे उपन्यास का दूसरा महत्त्वपूर्ण तत्त्व चरित्र-चित्रण का कलात्मक संभावनाओं की दृष्टि से विकास हुआ। उपन्यासकार चरित्र-चित्रण द्वारा मानवीय मन को छूने का प्रयास करता है। पात्रों के मानवीय मन के बारे में डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर का कथन सही है- ''अपनी-अपनी निर्मिति प्रक्रिया के संबंध में लेखक जैसे-जैसे सजग होकर मानवीय मन के तल को छूने का सचेत प्रयत्न करने लगे। वैसे-वैसे चेतन-अचेतन मन के व्यापारों ने लेखन प्रक्रिया पर अधिक प्रकाश डालना शुरू किया। परिणामतः चरित्रों के पीछे जो असलियत है, संदर्भ है उसका भी ज्ञान होने लगा और उपन्यास के चरित्रों के पीछे की स्थिति को अथवा संदर्भ को महत्त्व मिलने लगा।''[1] अतः कहना सही होगा कि उपन्यासकार पात्रों के चरित्र को यथार्थ रूप में इंगित करता है।

4.2 चरित्र-चित्रण की संकल्पना -

हिंदी कथा-साहित्य में चरित्र-चित्रण की कुशलता ही कथानक के संघटन, विन्यास तथा गठन से अधिक महत्त्वपूर्ण है। उपन्यास में पात्रों के कार्य-व्यापारों से ही कथानक का निर्माण किया जाता है। उपन्यास की सफलता पात्रों की सुनिश्चित योजना पर होती है। इस बारे में डॉ. रामनिवास गुप्त की मान्यता है- ''सफल चरित्र-चित्रण के लिए यह आवश्यक है कि लेखक को मनोविज्ञान का ज्ञान हो ताकि पात्रों की आंतरिक कृतियों में प्रविष्ठ होकर उनका विशद एवं सूक्ष्म चित्रण किया जा सके।''[2]

---

1. डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर - उपन्यास स्थिति और गति, पृ. 10
2. डॉ. रामनिवास गुप्त - हिंदी साहित्य समीक्षा, पृ. 111

उपन्यास साहित्य में पात्रों के चरित्र-चित्रण के द्वारा उसके व्यक्तित्व के अंगों का परिक्षण किया जाता है। पात्रों के व्यक्तित्व के बारे में डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त का कहना है- "किसी भी पात्र के व्यक्तित्व के दो पक्ष होते हैं- बाह्य पक्ष और आंतरिक पक्ष। बाह्य व्यक्तित्व के अंतर्गत उसका आकार, रूप, वेश-भूषा, आचरण का ढंग, बातचीत आदि आते हैं और आंतरिक पक्ष का संबंध उसकी मानसिक तथा बौद्धिक विशेषताओं से होता है।"[1] अतः स्पष्ट होता है कि उपन्याकसकार पात्रों के व्यक्तित्व के पहलुओं को इंगित करता है।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में पात्रों के व्यक्तित्व के पहलुओं को इंगित किया है। उन्होने पात्रों की आंतरिक चरित्र-चित्रण में पात्रों की मानसिक घुटन, तृष्णा तथा कुंठा को प्रस्तुत किया है। उनके 'सूने-चौखटे' उपन्यास का प्रमुख पात्र 'कमला' की मानसिकता को प्रस्तुत किया है। उसके साथ-साथ 'सोया हुआ जल' उपन्यास में राजेश, विभा, किशोर, रतना आदि के द्वारा उनकी मानसिकता को मार्मिकता से प्रस्तुत किया है। सर्वेश्वर जी के विवेच्य उपन्यासों में चित्रित चरित्र का प्रस्तुतीकरण इस प्रकार है-

4.3 'सूने चौखटे' उपन्यास में चित्रित पात्र एवं चरित्र-चित्रण -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के 'सूने चौखटे' उपन्यास में मुख्य या प्रधान पात्र, गौण पात्र तथा सहाय्यक पात्रों का चित्रण मिलता है। इस उपन्यास में पात्रों की संख्या ग्यारह है। यह लघु-उपन्यास होने के कारण पात्रों की संख्या मर्यादित है। इस उपन्यास में प्रधान पात्र के रूप में कमला और रामू दृष्टिगोचर होते हैं। इन प्रमुख पात्रों को छोड़कर अन्य गौण पात्रों के रूप में हेम दीदी, आंधी नानी, खुन्नू, ग़ामगुलाम, सीता, गूंगा माली, लाला बालेदीन, कमला की सौतेली माँ, बाबूजी आदि गौण पात्र के रूप में परिलक्षित होते हैं। विवेच्य उपन्यास के प्रमुख पात्र तथा गौण पात्रों का चित्रण इस प्रकार से है-

---

1. डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त - पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत, पृ. 366

4.3.1 प्रमुख पात्र -

उपन्यास में मुख्यतः प्रमुख तथा गौण दो प्रकार के पात्र होते हैं। उपन्यास में प्रधानतः पात्रों के द्वारा ही कथानक को आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। अतः 'सूने चौखटे' उपन्यास के प्रमुख पात्र 'कमला' और 'रामू' की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार से हैं-

4.3.1.1 कमला -

'सूने चौखटे' उपन्यास में केंद्रीय स्त्री पात्र 'कमला' है। उपन्यास की कथा कमला के व्यक्तित्व के इर्द-गिर्द घुमती है। कथानक के आरंभ से लेकर अंत तक कमला का महत्त्वपूर्ण स्थान है। कमला की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार से हैं-

4.3.1.1.1 उपन्यास की नायिका -

'सूने चौखटे' उपन्यास की कमला मध्यवर्गीय परिवार की प्रमुख पात्र है। उसी कारण उपन्यास में उसकी पीड़ा, दुःख तथा दर्द आदि को सर्वेश्वरजी ने यथार्थ रूप में चित्रित किया है। विवेच्य उपन्यास में आरंभ से अंत तक कमला का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उसके बारे में डॉ. कल्पना अग्रवाल लिखती हैं- ''कमला उड़े हुए रंग (सूने चौखटे) की नायिका है।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि कमला 'सूने चौखटे' उपन्यास की नायिका है। उसकी मानसिकता का चित्रण मार्मिकता से किया है। यह प्रतीकात्मक शैली में लिखा उपन्यास है। इसमें कमला की तृष्णा, तथा कुंठा का चित्रण मिलता है।

4.3.1.1.2 प्रतिभाशाली -

कमला का व्यक्तित्व एक प्रतिभाशाली नारी के रूप में चित्रित हुआ है। वह एक प्रतिभा संपन्न छात्र भी है। कमला पढ़ाई में तेज है। उसकी प्रतिभा के बारे में डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल का कथन द्रष्टव्य है- ''प्रतिभाशाली बालिका कमला छोटे से बालक रामू को अपना नाम ठीक से लिखना सिखाती है।''[2] वह कोई भी कार्य बड़ी लगनता तथा कुशलता से पूरा करती

---

1. डॉ. कल्पना अग्रवाल - सर्वेश्वरदयाल सक्सेना : व्यक्ति और साहित्य, पृ. 145
2. डॉ. कृष्णदत्त पालिवाल - सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का रचनाकार्य, पृ.

है। कमला के बाबूजी रामू के साथ उसे स्कूल भेजते हैं। कमला पढ़ाई में गहरी रुचि रखती है। इसी कारण कमला स्कूल में प्रथम आने का सम्मान पाती है। उसे स्कूल की मास्टरनी से इनाम में रंगी-बिरंगी किताबें भी मिलती हैं। अतः कमला में प्रतिभाशाली गुण विशेष रूप में दिखाई देते हैं।

4.3.1.1.3 महत्त्वाकांक्षी -

कमला के व्यक्तित्व में महत्त्वाकांक्षी गुण दिखाई देता है। वह पढ़ाई में तेज है। इसी कारण वह पढ़ाई में गहरी रुचि रखती है। जब मास्टरनी कमला के पढ़ाई का प्रयोजन जानना चाहती है। तब कमला मास्टरनी को संबोंधित करती हुई कहती है, ''मैं डाक्टरनी बनूँगी, कान में आला लगाकर सबको देखूँगी। मोटर पर चढ़कर घूमुँगी। तुमको दवा दूँगी कि तुम मोटी हो जाओ। और रामू का पेट चीरकर सब मिठाई निकालकर फेंक दूँगी।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि कमला महत्त्वाकांक्षी पात्र है। अतः कमला प्रस्तुत उपन्यास में डॉक्टरनी बनने की महत्त्वाकांक्षा रखती हुई परिलक्षित होती है।

4.3.1.1.4 स्पष्टवादी -

कमला के व्यक्तित्व का स्पष्टवादी यह एक पहलू है। वह किसी भी बात को स्पष्टता से प्रस्तुत करती है। कमला माँ के लाल दुपट्टे के प्रति आकर्षित होती है। वह अपनी सौतेली माँ के पास देखकर उसे खुब चाहती है। उसी तरह का लाल दुपट्टा कमला लेना चाहती है, परंतु पैसे न होने के कारण ले नहीं सकती। यह बात कमला रामू को बताती है। उस समय रामू उसे विश्वास देता है कि जब बाबूजी की दुकान बड़ी होगी तब वे मुझे बहुत पैसे देंगे, उसमें से कुछ पैसे तुमको भी दूँगा। इस बीच कमला स्पष्टता से कहती है- ''तू बड़ा आया देनेवाला, तेरे पैसे लेगा ही कौन ?''[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि कमला का स्वभाव स्पष्टवादी है।

कमला स्कूल में मिले रंगी-बिरंगी किताबों को देखकर बहुत खुश है। उस समय वह सीता को हाताश देखती है। जो पूँजीपति सेठ की बेटी है, परंतु पढ़ाई में तेज नहीं है। उसी

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 25
2. वही, पृ. 22

कारण सीता को कुछ इनाम नहीं मिलता। कमला सीता की सुविधाओं के बारे में कहती है- ''तेरे पास फूल है, तेरे पास रंग-बिरंगी किताबें हैं.... तेरे पास मास्टरनी जी की दी हुई फ्राक है ? बोल, बोलती क्यो नहीं ? बड़ी आई इक्केवाली ! सिर पर सोने की ईंट लटका ले और अपने सब दुपट्टे सिर पर लादकर धोबिन की तरह घूम।''[1] कहना आवश्यक नहीं कि कमला के व्यक्तित्व में स्पष्टवादीता का गुण दिखाई देता है।

4.3.1.1.5 जिज्ञासू -

मनुष्य के मन में हमेशा जिज्ञासा की भावना पनपती रहती है। कमला का व्यक्तित्व इसके लिए अपवाद नहीं है।

कमला स्कूल की सहपाठी सीता से बहुत दिनों के बाद मिलती है। तब उसकी शादी हो गई थी। कमला सीता के ससुरालवालों के बारे में पूछताछ करती है, साथ ही उसके पति के बारे में जानना चाहती है। तब सीता को संबोधित करती हुई कहती है- ''तुम्हारे पति देवता क्या करते हैं ?''[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि कमला जिज्ञासू वृत्ति का पात्र है। कहना आवश्यक नहीं कि कमला के स्वभाव में जिज्ञासा का पहलू दिखाई देता है।

4.3.1.1.6 मर्यादावादी -

कमला मर्यादावादी है। वह अपने परिवार तथा समाज की मर्यादाओं का पालन करती है। वह बचपन का साथी रामू से स्नेह रखती है। बाद में उसका स्नेह प्यार में बदल जाता है। रामू पढ़ाई के लिए शहर जाता है। वह कमला से प्यार करता है। वह आर्थिक अभावों के कारण कमला को पा नहीं सकता। वह कमला के विवाह के समय कमला से मिलता है। उस समय वह कमला को भाग चलने के लिए कहता है, परंतु कमला अपनी मर्यादाओं का याद करती रामू से कहती है- ''नहीं तो मैं तेरे साथ भाग चलती।''[3] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि कमला मर्यादावादी नारी है। वह रामू को सुखी रहने के लिए कहती है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 26
2. वही, पृ. 38
3. वही, पृ. 87

4.3.1.1.7 संस्कारशील -

कमला संस्कारशील महिला है। वह बचपन के साथी रामू के साथ मुहल्ले में सैर करती है। उस समय रामू लाला बालेदीन की बिस्कुट की दुकान देखकर कमला को बिस्कुट खाने के लिए कहता है। तब कमला रामू को संबोधित करती हुई कहती है- ''नहीं, माँ कहती है बाजार की चीज नहीं खानी चाहिए।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि कमला को बचपन से ही अच्छे संस्कार मिले थे।

कमला के विवाह को लेकर माता-पिता में बार-बार झगड़ा होता है। उसी कारण कमला अपने लिए उन्हें कष्ट नहीं देना चाहती है। वह अपनी माता-पिता के इच्छा के खातिर विवाह करने को तैयार होती है। अतः कमला के व्यक्तित्व में संस्कारशीलता के गुण स्पष्टता से दिखाई देते हैं।

4.3.1.1.8 भावुकता -

कमला के व्यक्तित्व में 'भावुकता' एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। वह निम्न वर्ग के अंधी नानी तथा गूंगा माली के सुख-दुःख में शामील होती है। मुहल्ले की अंधी नानी के प्रति भी कमला को बचपन से लगाव है। साथ ही बाबूजी से अंधी नानी के मृत्यु का रहस्य जानकर वह भावुक होती है। जब वह स्कूल की मास्टरनी हेम दीदी के पास जाती है। तब हेम दीदी कमला के सुस्त रहने का कारण पूछती है। इस बारे में कमला की भावुक मानसिकता को चित्रित किया है कि- ''कमला के होठों पर अंधी नानी का नाम था। वह भीतर से इतनी अधिक उमड़ उठी थी कि उसे लगा कि अंधी नानी का नाम लेते ही रो पड़ेगी, अपने को सँभाल नहीं सकेगी।''[2] कमला की भावुकता आश्चर्यजनक है, कोई लड़की किसी बूढ़ी के संबंध में इतना कैसे सोच सकती है ? फिर भी कमला को भावुक दिखाना, लेखक का लक्ष्य है। किशोरी या युवा अवस्था में अपनी ही बात सोचना स्वाभाविक है। किंतु उसे बूढ़ों के प्रति भावुकता से देखना आवश्यक है, जो नई पीढ़ी के लिए प्रेरक है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 7
2. वही, पृ. 36

इस प्रकार कमला का व्यक्तित्व प्रतिभाशाली, महत्त्वकांक्षी, जिज्ञासू, मर्यादावादी, संस्कारशील तथा भावूक आदि विशेषताओं से परिपूर्ण दिखाई देता है। कमला समाज की मर्यादाओं का पालन करनेवाली नारी है। वह प्रेमी रामु का साथ देने तथा उससे विवाह करने से इन्कार कर देती है। सर्वेश्वर जी ने कमला के माध्यम से उसके प्यार के रंग-रूप को असफल दिखाकर उपन्यास का शीर्षक इस उड़े हुए रंग की तरह होते हुए 'सूने चौखटे' रख दिया है।

4.3.1.2 रामू -

'सूने चौखटे' उपन्यास का केंद्रीय पुरुष पात्र रामू है। वह मध्यवर्गीय परिवार का युवा पात्र है। उसे आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ा। वह ट्यूशन करके अपनी पढ़ाई पूरी करता है। उसमें समझदारी तथा गंभीरता का भी गुण दिखाई देता है। कथानक में आरंभ से अंत तक रामू का महत्त्वपूर्ण स्थान है। रामू की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार से हैं-

4.3.1.2.1 उपन्यास का नायक -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना कृत 'सूने चौखटे' उपन्यास का केंद्रीय पुरुष पात्र रामू है। इसके बारे में डॉ. कल्पना अग्रवाल लिखती हैं- ''रामू 'सूने चौखटे' उपन्यास का नायक है।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि रामू विवेच्य उपन्यास का नायक एवं केंद्रीय पात्र है। साथ ही वह आदर्शवादी युवा भी है। उसमें समझदारी तथा गंभीरता आदि गुण दिखाई देते हैं। वह सहानुभूतिशील युवक है। वह निम्नवर्गीय लोगों के प्रति आस्था रखता है। इसके साथ ही वह उसकी मदद भी करता है।

4.3.1.2.2 खेलकूद में रुचि रखनेवाला -

रामू को खेलकूद के प्रति बड़ी रुचि है। उसे पढ़ाई में कम और खेल से अधिक लगाव है। इस कारण वह स्कूल में कम और खेल के मैदान पर अधिक समय बिताता है। वह कमला को खेल के बारे में जानकारी बताता है- ''कैसे रूमाल चोर खेलते समय वह सबको पीटता

---

1. डॉ. कल्पना अग्रवाल - सर्वेश्वरदयाल सक्सेना : व्यक्ति और साहित्य, पृ. 147

है, कैसे उसने एक दिन अपनी मास्टरनीजी को भी खूब छकाया था। कैसे दौड़ने में उसका कोई मुकाबला नहीं कर पाता। कैसे उसके वहाँ फुटबाल भी है और वह अपने दर्जे का कैप्टेन है।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि रामू खेल के प्रति आस्था रखता है। वह फुटबॉल के खेल में विशेष रुचि रखता है। इस कारण उन्हें एक फुटबॉल प्रतियोगिता में इनाम प्राप्त होता है। अतः स्पष्ट है कि रामू एक खेल में रुचि रखनेवाला खिलाड़ी है।

4.3.1.2.3 जिज्ञासू -

जिस प्रकार हर मनुष्य में किसी-न-किसी बात को जानने की इच्छा होती है। उसी प्रकार 'सूने चौखटे' उपन्यास का केंद्रीय पात्र रामू भी इसके लिए अपवाद नहीं है। वह बचपन से जिज्ञासू व्यक्ति है। वह बचपन की सहेली कमला की सौतेली माँ के बारे में जानना चाहता है, क्योंकि वह कमला को हररोज डाँटती-फटकारती है। इसी वजह से वह अपनी माँ को कहता है- ''माँ, कमला की माँ उसे मारती क्यों है ?''[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि रामू के मन में जिज्ञासा की वृत्ति दिखाई देती है। अतः रामू का व्यक्तित्व जिज्ञासू है।

4.3.1.2.4 समाज सेवी -

रामू के व्यक्तित्व का समाज सेवी एक पहलू है। वह अपनी गली में स्थित निम्न वर्गीय लोगों के प्रति आस्था रखता है। इस कारण वह उनके सुख-दुःख को पूरी लगन से सुनता है और उनकी मदद भी करता है। वह इतना अपनी गली में स्थित अंधी नानी की पीड़ा को देखकर दुःखी होता है। वह अंधी नानी के खाने-पीने तथा तबियत के बारे में पूछ-ताछ करता हुआ कहता है- ''तुमने कुछ खाया या नहीं ? भूख लगी हो तो माँ से रोटी ले आऊँ ?''[3] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि रामू में बचपन से ही समाज सेवी का गुण दृष्टिगोचर होता है। अतः रामू के व्यक्तित्व में समाज-सेवा का रूप इंगित होता है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 14
2. वही, पृ. 10
3. वही, पृ. 16

4.3.1.2.5 अन्याय-अत्याचार का विरोधी -

रामू का स्वभाव अन्याय-अत्याचार से विरोध करनेवाला है। वह समाज में प्रचलित अन्याय, अत्याचार का डटकर विरोध करता है। आज समाज में कई जगह नारी पर अन्याय, अत्याचार होता है। नारी को पति द्वारा भी अत्याचार सहना पड़ता है। रामू जब अपनी ही गली में रामगुलाम इक्केवाले द्वारा उसकी पत्नी को पिटता हुआ देखता है। तब वह रामुगुलाम इक्केवाले का मन-ही-मन विरोध करता है। वह कमला को बताता है कि "जिस दिन वह अपनी औरत को मारता है। उस दिन मैं इसके इक्के पर नहीं बैठता।"[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि रामू अन्याय-अत्याचार का विरोधी है, जो आज के युवा वर्ग के लिए प्रेरणादायी है।

4.3.1.2.6 दूसरों के प्रति चिंतित -

रामू समाज के निम्न वर्गीय लोगों की पीड़ा, दुःख तथा दर्द को देखकर दुःखी होता है। इसी वजह वह दूसरों के लिए सदैव चिंतित रहता है। वह अपने मुहल्ले के रामगुलाम इक्केवाला, लाला बालेदीन तथा अंधी नानी की पीड़ा के प्रति चिंता जताता है। एक दिन कमला के साथ गली में घुमते वक्त उसे अंधी नानी की कोठरी से कराहने की आवाज आती है। तब रामू कमला से चिंता प्रकट करता हुआ कहता है- "कहीं नानी मर तो नहीं गई ?"[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि रामू अंधी नानी की पीड़ा के प्रति चिंतित है। अतः रामू के स्वभाव में दूसरों के प्रति चिंता दिखाई देती है।

4.3.1.2.7 परिश्रमी -

रामू का चरित्र परिश्रमी है। वह निम्न मध्यवर्गीय युवा पात्र है। वह पिता की व्यवसायिक असफलता के कारण परिवार के साथ शहर जाता है। वहाँ वह अपनी आर्थिक स्थितियों को सुधारने के लिए परिश्रम करता है। वह जब बहुत दिनों के बाद कमला को मिलता है। तब अपनी पारिवारिक स्थिति के बारे में कमला को बताता है- "आठवीं के बाद से मैं भी ट्यूशन

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखट, पृ. 15
2. वही, पृ. 15

कर रहा हूँ, अपनी पढ़ाई का खर्च निकालना पड़ता है और आगे भी इसी शर्त पर पढ़ सकता हूँ कि घर से अधिक सहायता की आशा न रखूँ।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि रामू में परिश्रमी का पहलू दृष्टिगोचर होता है। अतः रामू का व्यक्तित्व मेहनती तथा परिश्रमी के रूप में परिलक्षित होता है।

4.3.1.2.8 असफल प्रेमी -

'सूने चौखटे' उपन्यास का केंद्रीय पात्र रामू असफल प्रेमी है। वह बचपन की सहेली कमला से स्नेह रखता है। इनका बचपन का स्नेह आगे प्यार का रंग लेता है। वह कमला से बेहद प्यार करता है, परंतु परिस्थिति के अभाव के कारण वह शहर चला जाता है। इस बीच वह अपने बचपन के प्यार को भूल नहीं पाता। वह प्यार के दीप को मन में पनपने देता है। जब वह सात साल के बाद कमला को मिलता है तब कमला की शादी अन्यत्र तय होती है। रामू कमला को विवाह के दिन मिलता है। अपने प्यार को जीवंत रखने के लिए वह अपने साथ कमला को भाग चलने का सुझाव देता है, परंतु कमला उसे साफ इन्कार करती है। उस समय वह कमला को संबोधित करता है- ''अभी तक लगता था जैसे तेरे प्रति मेरा कोई दायित्व है, तुझसे मैं कहीं बंधा हूँ, तुझे क्या जवाब दूँगा। लेकिन आज मैं अनुभव कर रहा हूँ- मैं मुक्त हूँ, कुछ भी कर सकता हूँ, मेरे ऊपर अब कोई प्रतिबंध नहीं है, कोई अनुशासन नहीं, मेरे मन ने ही आज मुझे स्वाधीन कर दिया है।''[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि रामू का व्यक्तित्व असफल प्रेमी के रूप में दिखाई देता है।

इस प्रकार विवेच्य उपन्यास का केंद्रीय पात्र रामू अपनी आर्थिक समस्याओं के कारण प्रेम का त्याग करता है। इनमें जिज्ञासू, समाजसेवी, परिश्रमी तथा अन्याय-अत्याचार का विरोधी आदि गुण दिखाई देते हैं।

4.3.2 गौण पात्र -

उपन्यास में प्रमुख पात्रों के साथ-साथ अन्य पात्र भी आते हैं, जो कथानक को आगे बढ़ाने में सहायता करते हैं। इनका उपन्यास में गौण स्थान होता है। इसी कारण इन पात्रों को

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 52
2. वही, पृ. 84

गौण पात्र कहा जाता है। 'सूने चौखटे' उपन्यास में चित्रित गौण पात्र हेम दीदी, खुन्नू, अंधी नानी, लाला बालेदीन, सीता आदि का विवेचन-विश्लेषण इस प्रकार है-

4.3.2.1 हेम दीदी -

'सूने चौखटे' उपन्यास की हेम दीदी गौण स्त्री पात्र है। वह उपन्यास में सहायक पात्र के रूप में दिखाई देती है। वह पेशे से स्कूल मास्टरनी है। उसका पारिवारिक परिवेश अच्छा नहीं है, क्योंकि उनके परिवार में कोई ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं है। इसी वजह से वे हेम दीदी की पढ़ाई बचपन में ही बंद करते हैं। परंतु हेम दीदी में पढ़ाई के प्रति रुचि होने के कारण चोरी-छिपे अपनी बी. ए. तक की पढ़ाई पूरी करती है। बचपन में ही हेम दीदी की शादी होती है। वह शादी के उपरांत भी नौकरी करना तथा पड़ोस के लोगों को पढ़ाने का काम करती है। तब ससुरालवाले उसपर रोक लगाते हैं। वह अपनी शिक्षा की रुचि के कारण सभी का त्याग कर देती और स्कूल में मास्टरनी की नौकरी करने लगती है। इससे उसे जीवन में अकेलापन के बगैर कुछ नहीं मिलता। वह जीवन में हताश होती है। उसी कारण वह कमला को सलाह देती है कि परिवारवालों की इच्छा के अनुसार ही विवाह करना आवश्यक है, क्योंकि उसने जीवन में स्वाभिमान और विद्रोह के कारण सुख नहीं तो दुःख-दर्द तथा पीड़ा को बहुत नजदीकी से देखा है।

सर्वेश्वर जी ने 'सूने चौखटे' उपन्यास में हेम दीदी को सहायक पात्र के रूप में इंगित किया है। प्रस्तुत उपन्यास की हेम दीदी स्वाभीमानी, संघर्षशील, बुद्धिमानी तथा आधुनिक विचारों की समर्थक आदि नारी के विविध रूपों में दृष्टिगोचर होती है।

4.3.2.2 खुन्नू -

'सूने चौखटे' उपन्यास का यह दूसरा गौण पात्र है। वह जाति से मेहतर है। वह पच्चीस-छब्बीस साल का छरहरे बदनवाला काले रंग का निम्नवर्गीय पात्र है। वह सैर के लिए जाते समय साफ कपड़े पहनकर जाता है। वह अपने घुँघराले बालों को खूब तेल लगाता है। वह निम्न वर्ग का प्रतिनिधिक पात्र है। उसे संगीत के प्रति विशेष रुचि है। उसने एक अंधे लड़के को साइड ड्रम बजाना सिखाया था, जो चमार जाति का था। खुन्नू अपने बलबूते पर एक बैंड कंपनी

खड़ी करता है। उसे वह इश्तहार बाँटते समय, विवाह-शादी के समय तथा जनेऊ-मुंडन आदि के अवसर पर सस्ते दामों में बजाते-घूमता है। उसे अपने मेहतर पेशे से साफ नफरत है। इसी कारण वह पिता से झगड़ा भी करता है। खुन्नू का बैंड कंपनी के प्रति विशेष लगाव है। वह अपने बैंड कंपनी के बारे में कहता है- ''उसकी जाति के थोड़े-से और लोग अगर उसका साथ दें तो वह उस छोटे शहर ही में नहीं, आसपास के कई शहरों के मुकाबले में सबसे अच्छा बैंड बना सकता है।''[1]

खुन्नू स्वभाव से तेज आदमी है। वह हमेशा बाबू लोगों के विरोध में मेहतरों की ओर से लड़ने के लिए तैयार रहता है। वह परिश्रमी व्यक्ति है। इसी कारण वह एक बार गली में लगे एक टाउन एरिया के लैंप-पोस्ट को जो टूट पड़ा था, तभी से वह कभी नहीं जलता उसने पहलवानी धक्के से गिरा दिया था। इस के साथ ही वह नम्रशील है। वह हर आने-जानेवाले लोगों को हाथ जोड़कर 'नमस्ते' करता है। खुन्नू आदर्श प्रेमी है। इनका एक खत्री की लड़की से प्यार होता है। उसके साथ वह जी जान से प्यार करता है। परंतु खुन्नू निम्न वर्ग का होने के कारण खत्री की बेटी उससे शादी करने के लिए तैयार नहीं होती। इसी वजह से खुन्नू बहुत निराश होता है। परिणामतः वह अपना पूरा जीवन शराब पीने में बिताता है। समाज में आज भी खुन्नू जैसी असफल प्रेमी की घटनाएँ घटित होती हैं। जो अपना पूरा जीवन बरबाद करते फिरते हैं।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जी ने खुन्नू के व्यक्तित्व के विविध पहलुओं को उपन्यास में चित्रित किया है। खुन्नू का व्यक्तित्व समाजसेवी, आदर्श प्रेमी तथा परिश्रमी आदि विशेषताओं से परिलक्षित होता है।

4.3.2.3 अंधी नानी -

'सूने चौखटे' उपन्यास का तृतीय गौण पात्र अंधी नानी है। वह जाति से कहार है इनकी उम्र सत्तर साल की है। वह एक छोटी कोठरी में रहती है। उन्होने एक ढीली अरगनी पर मैले-कुचैले, फटे-पुराने कपड़े रखे हैं। वह खाना बनाने से लेकर झाड़ू लगाने और बरतन माँजने तक का काम स्वयं करती है। इसने अपनी पूरी जिंदगी मुहल्ले के बाबू लोगों के घरों में काम करके

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 17

बिताई है। बीमारी में भी वह समय निकालकर किसी के यहाँ चौका-बरतन करने जाती है। इनका मुहल्ले के रामू और कमला से स्नेह है। वह स्वयं भूखी मरती है, लेकिन चार ब्राह्मण को भोजन देने की आखरी इच्छा लाला को बताती है। वह लाला बालेदीन को कहती है- ''तुम धर्मात्मा हो, मेरी भी मिट्टी पार लगा देना, भगवान तुम्हें इसका फल देंगे। चोला तो छूट ही जाता है, इसका मोह मुझे रत्ती-भर नहीं है। हो जाए तो ठीक है, नहीं थोड़े में काम चलाना। ज्यादा परदा-ओरदा की भी फिक्र न करना, उसके लिए एक सफेद धोती अरगनी पर टाँगी है, मिट्टी ढक जाएगी। बामन जरूर खिला देना।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि अंधी नानी पुरानी परंपराओं से लिप्त दिखाई देती है। अतः सर्वेश्वर जी ने अंधी नानी के माध्यम से मजदूर वर्ग की पीड़ा, दर्द, व्यथा और असहायता को चित्रित किया है।

4.3.2.4 सीता -

सीता 'सूने चौखटे' उपन्यास का गौण पात्र है। वह एक मारवाडी सेठ की लड़की है। वह एक पूँजीपति वर्ग का प्रतिनिधि पात्र है। इसी कारण स्कूल जाते समय वह इक्के पर बैठकर जाती है। इनके पास रंगी-बिरंगी किताबे हैं, बहुत सारे दुपट्टे हैं और सोने का लट्टू भी है। वह पढ़ाई में तेज नहीं है। कम उम्र में ही उसकी शादी होती है।

सीता में अहंकार नहीं है। वह अपना पुराना साथी रामू की सहायता करना चाहती है। उसे जो चाहे पैसों की मदद करना चाहती है। इसी बीच वह कमला को चिठ्ठी लिखकर रामू का पता पूछती है। वह विवाह के उपरांत बहुत दिनों के बाद जब कमला को मिलती है। तब अपनी ससुराल का पारिवारिक माहौल कमला को बताती हुई उसे ससुराल आने के लिए कहती है- ''एक दिन मेरे यहाँ आओ।''[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि सीता में संस्कारशीलता का गुण दिखाई देता है। सहायता करने का गुण भी उसके पास है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 34
2. वही, पृ. 39

सर्वेश्वर जी ने सीता के माध्यम से विवेच्य उपन्यास में संस्कारशील तथा अहंकार विहिन गुणों से संपन्न चरित्र को चित्रित किया है।

4.4 'सोया हुआ जल' उपन्यास में चित्रित पात्र एवं चरित्र-चित्रण -

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के 'सोया हुआ जल' उपन्यास में मुख्य पात्र और गौण पात्र का चित्रण मिलता है। यह प्रतीकात्मक शैली में लिखा हुआ, लघु उपन्यास है। यह लघु उपन्यास होने के कारण इसमें पात्रों की संख्या मर्यादित है। इसमें पात्रों की संख्या लगभग तेरह है। विवेच्य उपन्यास में प्रधान पात्र के रूप में राजेश और विभा दिखाई देते हैं। इन प्रमुख पात्रों को छोड़कर गौण पात्रों के रूप में किशोर, दिनेश, प्रकाश, बूढ़ा पहरेदार तथा नारी पात्रों में रतना, गोरी लड़की आदि का चरित्र परिलक्षित होता है। विवेच्य उपन्यास के प्रमुख पात्र तथा गौण पात्रों का चित्रण इस प्रकार है-

4.4.1 प्रमुख पात्र -

उपन्यास में पात्र मुख्यतः दो प्रकार के पात्र होते हैं- प्रमुख पात्र तथा गौण पात्र। उपन्यास में जो पात्र कथानक से सीधा संबंध रखते हैं और कथानक को गति देते हुए विकसित भी होते हैं। उन्हें प्रमुख पात्र कहा जाता है। अतः 'सोया हुआ जल' उपन्यास के प्रमुख पात्र 'राजेश' और 'विभा' हैं। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

4.4.1.1 राजेश -

राजेश 'सोया हुआ जल' उपन्यास का केंद्रीय पात्र है। उपन्यास की कथा राजेश के व्यक्तित्व के इर्द-गिर्द है। वह कथानक के आरंभ से लेकर अंत तक उपन्यास में मौजूद है। जिसकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

4.4.1.1.1 उपन्यास का नायक -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना कृत 'सोया हुआ जल' उपन्यास का केंद्रीय पात्र राजेश है। उसके बारे में डॉ. कल्पना अग्रवाल लिखती हैं- " 'सोया हुआ जल' का नायक राजेश है।"[1]

---

1. डॉ. कल्पना अग्रवाल - सर्वेश्वरदयाल सक्सेना व्यक्ति और साहित्य, पृ. 149

उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि राजेश विवेच्य उपन्यास का नायक है। वह शादीशुदा युवक है। वह पत्नी विभा के साथ भाई किशोर का पता लगाने के लिए आता है। वह ताल के किनारे स्थित यात्रीशाला के कमरा नं. 1 में ठहरा है। वह वास्तविक जीवन की इच्छाओं को अचेतन मन के द्‌वारा पूरा करता है।

4.4.1.1.2 आदर्श पति -

मनुष्य को संसारिक जीवन में सफलता हासिल करने के लिए अपने पारिवारिक संबंधों को दृढ़ रखना आवश्यक होता है। इसके बारे में राजेश और विभा खरे उतरे हैं। वे दोनों समझदार हैं। इसी कारण इनका वैवाहिक जीवन सुखमय है। राजेश विभा का इतना खयाल रखता है कि उसे किसी भी तरह का दुःख नहीं देना चाहता। वह विभा को कभी-भी डांटता नहीं है। वह हर वक्त विभा का भला चाहता है। वह पत्नी विभा को कोई कष्ठ नहीं पहुँचाने देता। वह विभा का बहुत खयाल रखता है। जब एक दिन कमरे में सोते समय विभा घबराकर चिल्लाती है तब राजेश उसे संबोधित करते हुए कहते हैं- ''क्या कोई सपना देखा था ? बहुत बुरी तरह चिल्ला रही थी।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि राजेश विभा का हर समय खयाल रखता है। अतः स्पष्ट है कि प्रस्तुत उपन्यास का राजेश एक आदर्श पति के रूप में सामने आता है।

4.4.1.1.3 सौंदर्य का पुजारी -

हर मनुष्य को सौंदर्य का आकर्षण होता है। चाहे वह सौंदर्य प्रकृति का हो, नारी का हो, भगवान का हो तथा पशु-पक्षियों का हर मनुष्य का सौंदर्य के प्रति लगाव कम-अधिक मात्रा में क्यों न हो, लेकिन आवश्य होता है। 'सोया हुआ जल' उपन्यास का केंद्रीय पात्र राजेश इसका उदाहरण है। वह सौंदर्य का पुजारी है। इनके सौंदर्य की मान्यता के बारे में डॉ. कल्पना अग्रवाल

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 17

लिखती हैं- ''वह सौंदर्य का पुजारी है। विभा के सौंदर्य एवं गुणों की तारीफ करना उसका स्वभाव है।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि राजेश स्वभावतः सौंदर्य का चाहता है।

राजेश पत्नी विभा के सौंदर्य की तारिफ करता है। वह मेज पर बैठकर विभा के रूप को निहारता है। साथ ही विभा के घुंघराले बालों को भी निहारता है। उस समय वह विभा को संबोधित करता हुआ कहता है- ''हर रोशनी तुम पर फबती है। तुम्हारा सौंदर्य दुगुना हो जाता है। तुम्हारी हलकी बैंगनी साड़ी का रंग देखो, कितना और गहरा हो उठा है।''[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि राजेश सौंदर्य के प्रति आकृष्ट होता है। अतः राजेश सौंदर्य का पुजारी दिखाई देता है।

4.4.1.1.4 कर्म के प्रति निष्ठा रखनेवाला -

राजेश कर्म के प्रति एकनिष्ठ व्यक्ति है। वह कोई भी कार्य हाथ में लेता है, तो उसे पूरा किए बिना नहीं रहता। जब वह ताल के किनारे स्थित यात्रीशाला में भाई किशोर का पता लगाने के लिए आता है, परंतु अपने भाई का कुछ पता नहीं लगता, तब पूरी तरह थक जाता है फिर भी वह थककर कमरे में विभा के साथ आता है। रात में राजेश कुछ लिखना चाहता है। पत्नी विभा उसे आराम करने के लिए कहती है। तब राजेश विभा को संबोधित करता है- ''बस दो-एक घंटों मैं सब जरूरी चिठ्ठियों का जवाब लिख दूँगा। फिर...।''[3] राजेश अपने कार्य के प्रति सजग है। वह रात में देर तक लिखने का कार्य करता है। अतः राजेश के व्यक्तित्व में कार्यनिष्ठा का पहलू दिखाई देता है।

4.4.1.1.5 विभा को सहारा देनेवाला -

राजेश अपनी पत्नी विभा को हर समय सुख-दुःख में सहारा देता है। वह यात्रीशाला में भाई किशोर का पता लगाने के लिए विभा के साथ आता है। उसे दिन भर घुमने के बाद भी किशोर का कुछ पता नहीं लगता।

---

1. डॉ. कल्पना अग्रवाल - सर्वेश्वरदयाल सक्सेना व्यक्ति और साहित्य, पृ. 149
2. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 11
3. वही, पृ. 12

LIBRARY

जब एक दिन रात में सोते हुए विभा चिल्लाकर उठती है तब राजेश विभा को संबोधित करता हुआ कहता है- ''बहुत घबरा गई हो। कैसा सपना देखा था तुमने ! ओवल्टीन बना दूँ ?''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि राजेश विभा को सुख-दुःख में सहारा देता है। अतः स्पष्ट है कि राजेश विभा का सुख दुख का साथी है।

4.4.1.1.6 डरपोक -

राजेश डरपोक व्यक्ति है। जब वह कमरे में रात के समय लिखने का कार्य करता है। तब पत्नी विभा उसे आराम करने के लिए कहती है। परंतु वह अपना लेखन कार्य जारी रखता है। राजेश विभा विभा की बात नहीं मानता तब वह उस पर क्रोधित होती है। विभा उसे भला-बूरा कहती है। उस समय राजेश विभा को कहता है- ''तुम यह सब क्या अंड-बंड बक रही हो। लो सो जाओ, अब मैं काम नहीं करता।''[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि विभा की बातों से डरकर राजेश सो जाना पसंद करता है। अतः राजेश के व्यक्तित्व में डरपोक वृत्ति का दर्शन होता है।

इस प्रकार सर्वेश्वर जी ने राजेश के व्यक्तित्व को आदर्श पति, सौंदर्य का पुजारी तथा कर्म के प्रति निष्ठावान आदि विशेषताओं से युक्त दिखाया है। राजेश अपने लापता भाई की खोज करना प्रधान लक्ष्य मानता है। वह सपनों की दुनिया में भी सैर करता है। वह चेतन मन से पत्नी विभा को चाहता है, परंतु अचेतन मन के द्वारा पुरानी प्रेमिका गोरी लड़की से संबंध रखना चाहता है।

4.4.1.2 विभा -

'सोया हुआ जल' उपन्यास की विभा केंद्रीय स्त्री पात्र है। प्रस्तुत उपन्यास में विभा आरंभ से लेकर अंत तक मौजुद दिखाई देती है। इनकी भीतरी मानसिकता में कुंठा, घुटन तथा तृष्णा आदि पहलू दिखाई देते हैं। वह एक मध्यवर्गीय स्त्री पात्र है। विभा की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 17
2. वही, पृ. 17

4.4.1.2.1 उपन्यास की नायिका -

उपन्यास के विकास में नायिका का बड़ा स्थान होता है। इस बारे में डॉ. सुखदेव शुक्ल की मान्यता है- ''हिंदी उपन्यास-साहित्य के विकास का अध्ययन करते समय उपन्यास के नायक और खलनायक की उद्‌भावना के साथ-साथ उपन्यास नायिका की उद्‌भावना का अध्ययन बहुत जरूरी है।''[1] अतः उपन्यास के विकास क्रम में नायिका का स्थान महत्त्वपूर्ण होता है।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना रचित 'सोया हुआ जल' उपन्यास का केंद्रीय स्त्री पात्र विभा है। जो शादी-शुदा है। इनके नायिकत्व के बारे में डॉ. कल्पना अग्रवाल लिखती है- ''विभा 'सोया हुआ जल' की प्रधान नायिका है।''[2] वह पति राजेश के साथ यात्रीशाला में आती है क्योंकि वह राजेश के भाई किशोर का पता लगाना चाहती है। वह वास्तविक जीवन की इच्छाओं को स्वप्नों द्‌वारा पूरा करती है।

4.4.1.2.2 पत्नी के रूप में -

संसारीक जीवन में सफल होने के लिए पति के साथ-साथ पत्नी का भी महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। वह पति की प्रेरक होती है। इस बारे में डॉ. नीता रत्नेश कहती हैं - ''पत्नी का परिवार में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है, वह गृहिणी रूप में जहाँ घर रूपी राज्य की स्वामिनी है, वहीं प्रेमिका, अर्धांगिनी तथा सती आदि रूपों में पति की प्रेरणादायी शक्ति रही है।''[3]

भारतीय संस्कृति में विवाहित नारी पति को अपना सर्वस्व मानती है। वह अपने पति के सुख में ही अपना सुख मानती है। उसका विवाह राजेश से हुआ है। वह पति राजेश का हर वक्त खयाल रखती है। इसके बारे में डॉ. कल्पना अग्रवाल लिखती हैं- ''वह राजेश के सुख में अपना सुख मानती है। हर घड़ी राजेश की सेहत का ख्याल रखती है। राजेश से दूर रहने की

---

1. डॉ. सुखदेव शुक्ल - हिंदी उपन्यास का विकास और नैतिकता, पृ. 293
2. डॉ. कल्पना अग्रवाल - सर्वेश्वरदयाल सक्सेना : व्यक्ति और साहित्य, पृ. 143
3. नीता रत्नेश - भागवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में नारी, पृ. 110

कल्पना भी नहीं कर सकती।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट है कि विभा के चरित्र में आदर्श पत्नी के गुण दिखाई देते हैं। वह समझदार स्त्री है। अतः विभा का व्यक्तित्व एक आदर्श पत्नी के रूप में दिखाई देता है।

4.4.1.2.3 दृढ़ निश्चयी -

दृढ़ निश्चयी विभा के व्यक्तित्व का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। यात्रीशाला में पति राजेश के साथ आयी है। वह रात में राजेश को आराम करने के लिए कहती है, परंतु राजेश हाथ में लिया कुछ चिठ्ठियों का जवाब लिखना चाहता है। उस समय विभा राजेश को संबोधित करती हुई कहती है- ''मुझे नींद नहीं आती, जब तक तुम काम करोगे मैं नहीं सोऊँगी।''[2] अतः स्पष्ट होता है कि विभा स्वभाव से दृढ़ निश्चयी है। वह अपने निर्णय पर अड़ीग रहती है। जब विभा पति राजेश के पास सो जाती है, तब अचेतन मन में पुराने प्रेमी मोहन से मिलने का निश्चय करती है। वह स्वप्न में इसकी पूर्ति करती है। अतः विभा के व्यक्तित्व में दृढ़ निश्चयी यह पहलू दष्टिगोचर होता है।

4.4.1.2.4 मर्यादावादी -

भारतीय संस्कृति में नारी को महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारतीय नारी मर्यादावादी, पति के प्रति प्रेम, कुशलता तथा संस्कारशीलता आदि गुणों से युक्त नजर आती है। इस संदर्भ में विवेच्य उपन्यास की नायिका विभा अपवाद नहीं है। वह पति राजेश के साथ यात्रीशाला में किशोर का पता लगाने के लिए आती है। वह चेतन मन से पति राजेश के पास सो जाती है, परंतु अचेतन मन से पुराने प्रेमी मोहन के प्रति आकर्षित है। वह स्वप्न में मोहन से संबंध रखना चाहती है। इस बीच वह प्रेमी मोहन के साथ घूमती है। वह मोहन से प्यार करती है परंतु वह नारी की मर्यादा का पालन करती है। इस बारे में डॉ. कल्पना अग्रवाल लिखती हैं- ''जब मोहन उसे अपने घर ले जाना

---

1. डॉ. कल्पना अग्रवाल - सर्वेश्वरदयाल सक्सेना : व्यक्ति और साहित्य, पृ. 149
2. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 12

चाहता है तब विभा जाने से इन्कार कर देती है।''[1] विभा के व्यक्तित्व में मर्यादावादी भारतीय नारी का गुण दिखाई देता है।

4.4.1.2.5 प्रेमिका के रूप में -

विभा के व्यक्तित्व की एक विशेषता है। वह प्रेमी स्त्री पात्र है। वह विवाह के पूर्व और विवाह के बाद भी प्रेमिका के रूप दिखाई देती है। वह पति राजेश से चेतन मन के द्वारा बहुत प्यार करती है। वह राजेश का बहुत खयाल रखती है। इस बारे में विभा राजेश को संबोधित करती हुई कहती है- ''मुझे तुम्हारा रुपया-पैसा कुछ नहीं चाहिए। तुम्हारे सुख में ही मेरा सुख है।''[2] अतः कहना सही होगा कि विभा को पति राजेश के प्रति प्रेम है।

विभा अचेतन मन में पुराने प्रेमी मोहन से प्यार करती है। इस बारे में सर्वेश्वर जी लिखते हैं- ''मैं तुम से झूठ बोल रही थी। मैंने विवाह कहाँ किया ? देखो मेरे पैर में बिछिया, मेरी मांग में सिंदूर, कहीं कुछ तो नहीं है। मैं तो महज तुम्हारे आने की प्रतीक्षा कर रही थी।''[3] उक्त कथन में विभा का प्रेमी रूप दिखाई देता है। वह मोहन के प्रति आकृष्ट होती है। इस प्रकार से विभा का व्यक्तित्व एक प्रेमिका के रूप में दिखाई देता है।

4.4.1.2.6 डरपोक -

विभा के व्यक्तित्व का डरपोक एक पहलू है। जब वह राजेश के साथ यात्रीशाला में आयी थी तब वह राजेश के साथ किशोर का पता लगाने के लिए घुमती है। परंतु उसका कोई पता नहीं लगता। वह कमरे में राजेश के पास सो जाती है। इस वक्त वह स्वप्नों में राजेश से दूर-दूर भटकती है। वह स्वप्न में पुराने प्रेमी चित्रकार मोहन से मिलती है। इस समय वह मोहन के साथ नाव में बैठकर दूर-दूर जाने का फैसला करती है, परंतु मोहन अपनी गरीबी और अपने व्यवसाय की असफलता के कारण उसकी बातों को टालता है। मोहन विभा को नाव से उतरने को कहता है।

---

1. डॉ. कल्पना अग्रवाल - सर्वेश्वरदयाल सक्सेना : व्यक्ति और साहित्य, पृ. 149
2. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 17
3. वही, पृ.

लेकिन विभा नाव से उतरने के लिए इन्कार करती है। इस वक्त मोहन स्वयं नदी में कुदने की धमकी देता है। इस कारण से विभा घबराकर 'बचाओ, बचाओ' करके चिल्लाती है। राजेश उसे सहारा देता है। इस वक्त विभा राजेश को संबोधित करती हुई कहती है- ''पता नहीं क्यों, जी घबरा रहा है। इस समय मैं तुमसे एक क्षण भी दूर रहने की कल्पना नहीं कर सकती।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि विभा एक डरपोक स्त्री है। वह जी जान से मोहन को चाहती है। उसी के पास रहना चाहती है। विभा अपनी अतृप्त इच्छा सपने में तृप्त करती है।

4.4.1.2.7 स्पष्टवादी -

विभा के व्यक्तित्व की स्पष्टवादी एक विशेषता है। वह किसी भी बात को स्पष्टता से राजेश को कहती है। वह कमरे में रात के समय राजेश को आराम करने को कहती है, परंतु राजेश चिठ्ठियों के जवाब लिखने का कार्य करता ही है। उस समय विभा राजेश को संबोधित करती हुई कहती है- ''तुम अभी नहीं सोओगे ? आज बहुत थके हो- आज काम मत करो।''[2] उक्त कथन से स्पष्ट होने में देर नहीं लगती कि विभा स्पष्टवादी नारी है।

4.4.1.2.8 सपनों की दुनियाँ में जीनेवाली नारी -

'सोया हुआ जल' उपन्यास के पात्र अचेतन मन की अभिव्यक्ति करते हैं। इसके लिए उपन्यास की नायिका विभा भी अपवाद नहीं है। वह ताल के किनारे स्थित यात्रीशाला में पति राजेश के साथ आयी है। वह चेतन मन में पति राजेश से प्यार करती है, परंतु अचेतन मन में पुराने प्रेमी मोहन से संबंध रखना चाहती है। क्योंकि वह मोहन को पूर्ण पुरुष के रूप में मानती है। वह प्रेमी मोहन के साथ रहना चाहती है। और जीवन गुजारना भी चाहती है। इनके सपनों के बारे में डॉ. सरोजनी त्रिपाठी लिखती हैं- ''विभा स्वप्न में अपने पुराने प्रेमी मोहन से नाव में बैठाकर दूर ले जाने की प्रार्थना करती है।''[3] कहना आवश्यक नहीं कि विभा सपनों में जीनेवाली औरत है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 22
2. वही, पृ. 12
3. डॉ. सरोजनी त्रिपाठी - आधुनिक हिंदी उपन्यासों में वस्तु-विन्यास, पृ. 260

साथ ही वह अपनी वास्तविक इच्छाओं को स्वप्नों के द्वारा पूरा करती है। विवेच्य उपन्यास में सर्वेश्वर जी ने मध्यवर्गीय स्त्री की कुंठा, घुटन तथा तृष्णा को स्पष्ट किया है।

4.4.2 गौण पात्र -

जो पात्र उपन्यास में प्रमुख न होकर सहायक होते हैं, उसे गौण पात्र कहा जाता है। इनका उपन्यास में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। ये पात्र कथानक को आगे बढ़ाने का कार्य करते हैं। 'सोया हुआ जल' उपन्यास में गौण पात्र के रूप में किशोर, रतना, दिनेश, प्रकाश तथा बूढ़ा पहरेदार आदि हैं। उनका विवेचन-विश्लेषण निम्नांकित है -

4.4.2.1 किशोर -

'सोया हुआ जल' उपन्यास का किशोर गौण पात्र है। यह उपन्यास के नायक राजेश का भाई है। वह पढ़ा-लिखा सुशिक्षित होने पर भी बेरोजगार है। किशोर की बेरोजगारी के बारे में डॉ. कल्पना अग्रवाल लिखती हैं- ''पढ़ा-लिखा होने पर भी किशोर बेरोजगार है।''[1] किशोर के माध्यम से बेरोजगारी की समस्या को यहाँ चित्रित किया है। उसको एक पूँजीपति की लड़की रतना से प्यार होता है, परंतु रत्ना के परिवारवालों से किशोर के प्यार का विरोध किया जाता है। इस कारण वह प्रेमिका रतना के साथ घर से भाग जाता है।

किशोर एक ताल के किनारे स्थित यात्रीशाला में आता है। वह अपनी प्रेमिका रतना के साथ यात्रीशाला के कमरा नं. 2 में ठहरता है। घर से भागते वक्त रतना हजार-बारह सौं के जेवर लेकर आती है, परंतु पैसे खत्म होने पर किशोर उसका साथ नहीं देना चाहता। उसी बीच वह प्रेमिका रतना को वापस जाने की सलाह देता है। क्योंकि वह भाई राजेश से घबराता है। वह जानता है कि रतना से शादी करने पर भाई राजेश तथा भाभी विभा से संबंध विच्छेदन होगा। वह यह नहीं चाहता, क्योंकि वह भाभी विभा से अचेतन मन से बहुत चाहता है। उसी कारण वह रतना से शादी भी नहीं करना चाहता। वह वास्तविक जीवन को स्वप्न में पूरा करता है। इसी बीच वह अचेतन मन में प्रेमिका रतना से शादी भी करता है। इस प्रकार किशोर अचेतन मन से रतना को भी

---

1. डॉ. कल्पना अग्रवाल - सर्वेश्वरदयाल सक्सेना : व्यक्ति और साहित्य, पृ. 151

चाहता है। इसके बारे में डॉ. धनराज मानधाने लिखते हैं- ''यथार्थ में किशोर भले ही रतना को न चाहता हो किंतु अचेतन में वह उसे आवश्य चाहता है।''[1] इस कथन से किशोर के अचेतन मन की द्वंद्व अवस्था दृष्टिगोचर होती है।

सर्वेश्वर जी ने विवेच्य उपन्यास में निम्नवर्गीय युवक की मानसिकता को किशोर के माध्यम से चित्रित किया है। वह कथानक में सहायक पात्र है। वह आरंभ से अंत तक कथा के साथ जुड़ा हुआ है। वह पलायनवादी, स्वार्थी, कायर, लाचार, बेकार तथा कामुक युवा पात्र है। वह पुँजीपति रतना से प्यार करके अपनी आर्थिक तथा शारीरिक इच्छा पूरा करता है। इन सारी बातों को स्पष्ट करना सर्वेश्वर जी का उद्देश्य है। आज भी समाज में बेकारी की समस्याएँ पनपती हुई दिखाई देती हैं।

4.4.2.2 रतना -

'सोया हुआ जल' उपन्यास की रतना गौण स्त्री पात्र है। वह एक पूँजीपति सेठ की इकलौती लड़की है। उसे निम्न-मध्यवर्गीय युवक किशोर से प्यार होता है। इसी कारण वह अपने घर से कीमती गहने लेकर किशोर के साथ भाग जाती है। इसका किशोर से एकनिष्ठ प्रेम है। वह अपने प्यार के लिए किसी भी मुसिबत को उठाने को तैयार होती है। वह किशोर को किसी भी हाल में नहीं छोड़ना चाहती है।

रतना सच्चे मन से किशोर को प्यार करती है, परंतु किशोर की पलायनवादी वृत्ति को देखकर वह दुःखी होती है। किशोर एक दिन रतना को वापस जाने की सलाह देता है। उस समय रतना बहुत दुःखी होती है। वह किशोर को संबोधित करती हुई कहती है- ''यही प्यार है तुम्हारा ? इसी प्यार की तुम दुहाइयाँ देते थे ! कहते थे, प्यार मुसीबतों को आसान बना देता है। प्यार अमर है, प्यार अनंत शांति है, जीवन और जगत् के हर भय से परे है। आज व्यंग्य करते हो। एक असहाय स्थिति में मुझे छोड़कर व्यंग्य करते हो।''[2] अतः स्पष्ट होता है कि रतना में स्पष्टोक्तित्व

---

1. डॉ. धनराज मानधाने - हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास, पृ. 243
2. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 13

दिखाई देता है। वह स्वयं को प्यार में धोखा खाई हुई मानती है। इसी कारण वह अपने बाबूजी के घर जाना चाहती है। इसी बीच वह अपने स्वयं के बचाव के लिए दिनेश के पास आती है। वह वापस जाने के लिए अपने नारीत्व की कीमत लगाने को तैयार होती है। उस समय दिनेश उसकी उपेक्षा करता है। इससे वह क्रोधित होकर वापस किशोर के पास जाती है। वह सपनों में दिनेश की मृत्यु देखती है। वह घर आकर बाबूजी से मिलती है। तो दूसरी ओर वह किशोर को कैदी के रूप में देखती है। इस समय इनका अहं जागृत होता है और किशोर से संबोधित करती हुई कहती है कि "अब बोलो ? मैं चाहूँ तो तुम्हें छुड़ा भी सकती हूँ।"[1] इससे रतना में अहंभाव का पहलु दृष्टिगोचर होता है। रतना के मन में किशोर के प्रति प्यार की कमी नहीं है। वह किशोर को पाकर ही संतुष्ट होती है। वह विवाह के समय किशोर से सोने की नहीं कीमती हीरे की अंगूठी की माँग करती है।

सर्वेश्वर जी ने विवेच्य उपन्यास में रतना को पूँजीपति वर्ग की प्रतिनिधिक पात्र के रूप में दिखाया है। वह स्पष्टवादी, आदर्श प्रेमिका तथा अहंकारी आदि के रूपों में दिखाई देती है। वह अन्य पात्रों की तरह सपनों में अपनी इच्छा पूरी करती है। वह जिस वर्ग में बड़ी हो गई है, उसके संस्कारों को भूलती नहीं है। विवाह के समय किशोर से हीरे की अंगूठी की माँग करती है।

4.4.2.3 दिनेश -

यह 'सोया हुआ जल' उपन्यास का गौण पात्र है। यह ताल के किनारे स्थित यात्रीशाला के कमरा नं. 7 में ठहरा है। वह किशोर का सच्चा मित्र भी है। इन के व्यक्तित्व में असाधारण का गुण भी है। इसकी असाधारणता के बारे में डॉ. धनराज मानधाने लिखते हैं- "यात्रीशाला से रतना भागने में जब उसकी सहायता चाहती है, तब वह उसके बदले में दिए जानेवाले रतना के शरीर को भी ठुकराता है। आसानी से प्राप्त होनेवाले नारी के शरीर को ठुकरानेवाला असाधारण पात्र दिनेश है।"[2] अतः कहना गलत नहीं होगा कि दिनेश में असधारण गुण दिखाई देता है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 43
2. डॉ. धनराज मानधाने - हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास, पृ. 318

दिनेश व्यसनों से पीड़ित है। वह हर दिन शराब पीता रहता है। एक दिन प्रकाश सहायता के लिए दिनेश के पास आता है। उस समय वह प्रकाश को खुन करने की सलाह देता है। इस बीच जनक्रांति का नेता प्रकाश रत्ना की हत्या करने के लिए तैयार होता है। इस वक्त दिनेश उसे कहता है- ''अब जाओ। चुपचाप सो रहो। मुझसे बिना पूछे कुछ मत करना।''[1] दिनेश जनक्रांति के नेता प्रकाश का पथ प्रदर्शन करता है। दूसरी ओर जनक्रांति का नेता प्रकाश रतना का खून करते हुए दिखाई देता है। उस समय दिनेश प्रकाश को संबोधित करता हुआ कहता है- ''याद रक्खो, आवाज खत्म कर सकते हो, लेकिन ये हिलते होंठ नहीं रोक सकेत ! और एक दिन यही हिलते हुए होंठ दूसरी क्रांति को जन्म देंगे जिसका आधार करुणा पर, संवेदना पर और मानवता पर होगा। तुम्हारा युग शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा।''[2] अतः दिनेश के व्यक्तित्व में स्पष्टवादिता का गुण दिखाई देता है।

सर्वेश्वर जी ने 'सोया हुआ जल' उपन्यास में दिनेश के माध्यम से समाज की वास्तविकता को दिखाया है। इनके व्यक्तित्व में उपदेशक, सहानुभूतिशील, सच्चा मित्र, नये विचारों के प्रवर्तक, समाज की भ्रष्ट वृत्ति का विरोधी तथा प्रकाश का पथ प्रदर्शक आदि व्यक्तित्व के पहलु को दर्शाया है। वह समाज में बाहर से नहों तो भीतर से परिवर्तन लाने का प्रयास करता है।

4.4.2.4 प्रकाश -

यह 'सोया हुआ जल' उपन्यास का गौण पात्र है। वह ताल के किनारे स्थित यात्रीशाला में कमरा नं. 11 में ठहरा है। वह जनक्रांति का नेता है। उसके जननायक के बारे में डॉ. सत्यपाल चुघ का कथन द्रष्टव्य है- ''सर्वहारा क्रांति से दुनिया को बदलनेवाले साम्यवादियों का प्रतिनिधिक प्रतीक प्रकाश है।''[3] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि प्रकाश साम्यवादि विचारप्रणाली का वाहक है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 39
2. वही, पृ. 44
3. डॉ. सत्यपाल चुघ - प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों की शिल्पविधि, पृ. 899

प्रकाश को एक दिन पार्टी ऑफिस से तार आता है। वह देखता है कि पार्टी ऑफिस में किसी ने आग लगा दी है। उस समय प्रकाश हताश होता है, परंतु वह हिम्मत नहीं हारता। इस कारण वह पार्टी के लिए पैसे जुटाना चाहता है, परंतु उसे पैसे नहीं मिलते। इस बीच वह अपनी व्यक्तिगत हैसियत पर दूसरों से सहायता माँगता है, परंतु इसे सहायता के बजाय व्यंग्य को ही सहना पड़ता है। इस कारण वह आवेश में कहता है- "फिर पार्टी-आफिस बनेगा और यही छोटी-मोटी आग विशाल जन-क्रांति की अग्नि को जन्म देगी, कामरेड। लेनिन ने कहा है, "हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।"[1] अतः कहना गलत नहीं होगा कि प्रकाश पर लेनिन का प्रभाव दिखाई देता है।

प्रकाश अपनी सहायता के लिए दिनेश के पास जाता है। उस समय दिनेश उसे एक पूँजीपति सेठ की लड़की रतना की हत्या करने की सलाह देता है। इसी बीच प्रकाश रतना की हत्या करने के लिए तैयार होता है। सर्वेश्वर जी ने प्रकाश के माध्यम से जनक्रांति की बातें करनेवालों के भीतरी स्वार्थांधता तथा शुद्रता का भंडाफोड किया है।

4.4.2.5 बूढ़ा पहरेदार -

'सोया हुआ जल' उपन्यास का वूढ़ा पहरेदार गौण पात्र है। विवेच्य उपन्यास में वह दुःखी, पीड़ित, रूपों में जीवन बीताता है। वह विवेच्य उपन्यास में घटित घटनाओं को चेतन या अेचतन अवस्था में देखता रहता है। वह ताल के किनारे स्थित यात्रीशाला को पहरा देने का काम करता है। वह समाज में फैले अंधकार तथा जर्जर पीड़ा को दूर करना चाहता है। इस कारण वह यात्रीशाला में 'जागते रहो' की बार-बार आवाज देता है। सर्वेश्वर जी ने अंत में इसकी मृत्यु दिखाई है।

इस प्रकार विवेच्य उपन्यास में बूढ़ा पहरेदार चेतन मन का प्रतीक है, जो समाज की अंधारमय स्थिति को 'जागत रहो' के नारे से जगाने का कार्य करता है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 37

निष्कर्ष -

निष्कर्षतः कहना गलत नहीं होगा कि सर्वेश्वर जी ने 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में पात्रों द्वारा समाज सुधार की माँग की है। इसमें रामू, कमला, बूढ़ा पहरेदार, दिनेश तथा राजेश आदि पात्रों द्वारा परिलक्षित होता है।

विवेच्य उपन्यासों में पात्रों का चित्रण बड़ी मार्मिकता से सर्वेश्वर जी ने किया है। इसमें पात्रों की मानसिक घुटन, तृष्णा तथा कुंठा आदि का यथार्थ रूपों में चित्रण किया है।

सर्वेश्वर जी के विवेच्य उपन्यासों के पात्र मर्यादावादी भी दिखाई देते हैं। इनमें कमला अपनी पारिवारिक तथा समाज की मर्यादाओं का पालन करती है। इस कारण वह अपने प्यार को ठुकरा देती है। इस तरह 'सोया हुआ जल' उपन्यास की पात्र विभा भी मर्यादा का पालन करती है।

सर्वेश्वर जी ने 'सूने चौखटे' उपन्यास के नायक-नायिका को असफल प्रेमी-प्रेमिका के रूप में चित्रण किया है। इसमें समाज सेवी मर्यादावादी, परिश्रमी, संस्कारशील तथा महत्त्वाकांक्षी आदि विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं।

सर्वेश्वर जी ने 'सोया हुआ जल' उपन्यास के नायक-नायिका को स्वप्न शैली के द्वारा प्रस्तुत किया है। इसमें दमित वासनाओं की विशेषता दिखाई देती है।

अतः सर्वेश्वर जी ने विवेच्य उपन्यासों में पात्रों द्वारा समाज की दुर्बलता तथा व्यवस्था को यथार्थ रूपों में स्पष्ट किया है। इससे समाज में सुधारवादी वृत्ति की ओर दृष्टि डाली है।